Ans. (c) – 'कुचामनी ख्याल' से संबंधित कथन (c) असत्य है, शेष सभी कथन सत्य हैं। कुचामनी ख्याल के प्रमुख कलाकार ''बेसीलाल खिलाड़ी'' और ''लच्छीराम'' है।
कुचामनी ख्याल प्रदर्शन के लिए ढोल और शहनाई जैसे वाद्ययंत्रों का उपयोग किया जाता है। इस ख्याल का प्रचार लोक जीवन के प्रसिद्ध लोकनाटकार लच्छीराम ने किया था।

276. राजस्थान में लच्छीराम द्वारा किस ख्याल का प्रवर्तन किया गया?

(a) शेखावटी ख्याल (b) जयपुरी ख्याल
(c) कुचामनी ख्याल (d) तुर्रा कलंगी ख्याल

संगणक भर्ती परीक्षा- 2018 (5 मई, 2018)

RPSC Prayogshala Sahayak (Vigyan) 28-06-2022

Ans. (c) : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

277. राजस्थान में 'पांवडा' लोकगीत किस अवसर पर गाया जाता है-

(a) शादी के अवसर पर दुल्हन की बहनों के द्वारा गाया गया गीत।
(b) नए दामाद के ससुराल आने पर स्त्रियों के द्वारा गाया गया गीत।
(c) राजस्थान को महिलाओं द्वारा गाया गया गीत।
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

Investigator Exam Date- 21.08.2016

Ans. (b) – राजस्थान में पांवड़ा लोक गीत विवाह के पश्चात नये दामाद के ससुराल आने पर स्त्रियों द्वारा गाया जाने वाला गीत है।

278. प्रसिद्ध भक्त कवयित्री मीरा के पति का नाम था –

(a) राणा रतन सिंह (b) राजकुमार भोजराज
(c) राणा उदय सिंह (d) राणा सांगा

उत्तर - (b)

RPSC RAS/RTS 1997-98

व्याख्या–मीराबाई मेवाड़ के राजा उदयसिंह के भाई भोजराज की पत्नी तथा मेड़ता के सरदार रत्न सिंह की पुत्री थी। यह कृष्ण भक्ति में लीन रहती थी। उन्हें पति मानकर गीत लिखती और गाती थी।

279. शरण रानी को जिस क्षेत्र में ख्याति प्राप्त है, वह है–

(a) साहित्य (b) चित्रकला
(c) संगीत (d) नृत्य

उत्तर - (c)

RPSC RAS/RTS 1999-2000

व्याख्या–शरण रानी हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र से सम्बन्धित हैं। पूर्व प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू उन्हें 'भारत की सांस्कृतिक दूत' कहा करते थे। शरण रानी शास्त्रीय संगीत की विद्वान और सुप्रसिद्ध सरोद वादक थीं।

280. शास्त्रीय संगीत पर प्रसिद्ध रचना 'राधागोविन्द संगीत सार' के रचयिता थे-

(a) देवर्षि भट्ट ब्रजपाल (b) देवर्षि भट्ट द्वारकानाथ
(c) हीरानंद व्यास (d) चतुर लाल सेन

उत्तर : (a)

व्याख्या - शास्त्रीय संगीत पर प्रसिद्ध रचना 'राधा गोविन्द संगीत सार' (राजस्थानी संगीत ग्रंथ) के रचयिता देवर्षि भट्ट ब्रजपाल है। राधा गोविन्द संगीत सार प्रताप सिंह द्वारा लिखवाया गया था।

281. निम्नलिखित में से राजस्थान के किस क्षेत्र से अलीबक्षी ख्याल सम्बद्ध है?

(a) करौली (b) चिड़ावा
(c) अलवर (d) चित्तौड़

उत्तर (c)

RPSC RAS/RTS 2016

व्याख्या- अली बक्षी ख्याल का मूल क्षेत्र अलवर का क्षेत्र है। इस ख्याल के जनक अली बक्ष हैं जिन्हें 'अलवर का रसखान' भी कहा जाता है।

282. गोपीजी भट्ट राजस्थान की किस लोक नृत्य शैली के कलाकार हैं?

(a) तमाशा (b) स्वांग
(c) रम्मत (d) नौटंकी

हाथकरघा निरीक्षक (उद्योग विभाग) भर्ती परीक्षा -2018

RPSC Librarian Gr-III 11-09-2022 Shift-I

Ans. (a) : गोपीजी भट्ट राजस्थान की तमाशा लोक नृत्य शैली के कलाकार थे। राजस्थान में तमाशा महाराज प्रताप सिंह के काल में प्रारम्भ हुआ। भट्ट परिवार के लोगों ने तमाशा को जयपुर में थियेटर के रूप में शुरू किया तथा इसमें जयपुर ख्याल और ध्रुपद गायकी का समावेश किया। भट्ट परिवार द्वारा प्रस्तुत 'तमाशा' महाराष्ट्र के तमाशे

283. 'गैर' नृत्य के समय पैरों में बांधी जाने वाली घुंघरूओं की पट्टी को कहा जाता है-

(a) रामझोल (b) रबाब
(c) चुंग (d) मादल

RPSC-2022

Ans. (a) : रमझौला लोक नर्तकों के पांवों में बाँधी जाने वाली घुंघरूओं की पट्टी होती हैं इसमें चमड़े या कपड़े की पट्टी पर छोटे-छोटे घुंघरू सिले जाते है। इसे पैरों में बॉधने पर पदचाप या नृत्य करने पर मधुर ध्वनि उत्पन्न होती है। होली के अवसर पर होने वाले नृत्य, उत्सव तथा गैर नृत्य में लोग इसे अपने पैरों में बाँधकर नृत्य प्रस्तुत करते है। गैर नृत्य राजस्थान के आदिवासी क्षेत्र में प्रचलित है।

284. मेवाड़ क्षेत्र में प्रसिद्ध गैर लोक नृत्य ..... के अवसर पर किया जाता है।

(a) बच्चे का जन्म (b) होली
(c) विवाह (d) मानसून

Pashudhan Sahayak Date. 04.06.2022

Ans. (b) : उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

285. 'गैर' नृत्य राजस्थान के किस क्षेत्र में प्रचलित है-

(a) शेखावटी (b) आदिवासी
(c) डाँग (d) मेवात

Complier Exam Date-21.08.2016

Ans. (b) – उपर्युक्त प्रश्न की व्याख्या देखें।

286. राजस्थान के एकमात्र शास्त्रीय नृत्य कत्थक के जयपुर घराने के प्रवर्तक माने जाते हैं।

(a) लच्छन महाराज (b) भानुजी महाराज
(c) बिरजू महाराज (d) उदयशंकर जी

RPSC OAA-2018 Ag. Deptt (Part-1) 17-10-2022

Ans. (b) : राजस्थान के एकमात्र शास्त्रीय नृत्य कत्थक के जयपुर घराने के प्रवर्तक भानुजी महाराज माने जाते हैं। जयपुर घराना कत्थक नृत्य शैली का सम्पूर्ण भारत में प्रचार प्रसार किया। जयपुर घराने को कत्थक नृत्य शैली का आदिम घराना माना जाता है।